International Journal of Applied Research 2021; 7(6): 315-318

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(6): 315-318
www.allresearchjournal.com
Received: 18-04-2021
Accepted: 20-05-2021

रजनी
एसोसिएट प्रोफेसर,
डा. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
रजनी
एसोसिएट प्रोफेसर,
डा. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी सिनेमा का योगदान

रजनी

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार 52,83,47,193 करोड़ भारतीय हिंदी को प्रथम भाषा या मातृभाषा घोषित करते हैं जबकि हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में बोलने वालों की संख्या 13.9 करोड़, तृतीय भाषा के रूप में बोलने वालों की संख्या 2.4 करोड़ और हिंदी बोलने वालों की कुल संख्या 62.9 करोड़ है जो कुल जनसंख्या का 57.10 प्रतिशत है। इन आंकड़ों के साथ हिंदी देश की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा ठहरती है। यदि हम इससे पूर्व 2001 की जनगणना पर दृष्टि डालें तो हिंदी बोलने वाली कुल जनसंख्या 55,14,16,518 करोड़ थी जो कुल जनसंख्या का 53.60 प्रतिशत थी। 1991 में हिंदी भाषियों की संख्या 33,72,72,114 थी। कहने का अभिप्राय यह है कि साल दर साल हिंदी बोलने वालों का प्रतिशत आश्चर्यजनक रूप से बढ़ रहा है। ग्लोबलाइजेशन के दौर में जबकि विश्व की अनेक भाषाएँ और बोलियाँ अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रही हैं और कुछ तो अंतिम साँसें गिन रही हैं, वहीं हिंदी बड़ी मदमस्त गति से इठलाती हुई आगे बढ़ रही हैं। वह निरंतर विकास के पथ पर गतिमान है। आज हिंदी पूरे भारत में बोली और समझी जाने वाली एकमात्र भाषा है जिसका प्रचार-प्रसार विदेशों में भी हो रहा है।

हिंदी के इस तीव्र विकास में जहाँ प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं हिंदी-फिल्मों ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में, उसे जन-जन तक पहुँचाने में तथा विश्व व्यापी बनाने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। हिंदी फिल्में भारत के साथ-साथ विदेशों में भी अत्यंत लोकप्रिय हैं। फिल्मी गानों ने हर जगह अपनी संप्रेषणीयता, कर्णप्रिय और मधुर संगीत के कारण धूम मचा रखी है। हिंदी फिल्मों के संवाद तो इतने लोकप्रिय हैं कि बच्चे-बच्चे की जुबान पर चढ़े हुए हैं। इतना ही नहीं विदेशी छात्रों को हिंदी शिक्षण का कार्य भी हिंदी फिल्म और उनके गीत कर रहे हैं। "हिंदी की फिल्मों, गानों, टी.वी. कार्यक्रमों ने हिंदी को कितना लोकप्रिय बनाया है इसका आकलन करना कठिन है। केंद्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी पढ़ने के लिए आने वाले 67 देशों के विदेशी छात्रों ने इसकी पुष्टि की कि हिंदी फिल्मों को देखकर तथा फिल्मी गानों को सुनकर उन्हें हिंदी सीखने में मदद मिली।"[1]

किसी भी देश का सिनेमा उस देश के समाज की महत्वपूर्ण प्रस्तुति होती है। साहित्य के समान उसे भी समाज का दर्पण कहा जा सकता है जिसमें यथार्थ, कल्पना और कला का संगम होता है। साहित्य में यह कार्य शब्द करते हैं जबकि सिनेमा में बोलती हुई तस्वीरें करती हैं। इसीलिए साहित्य की अपेक्षा सिनेमा लोगों में अधिक लोकप्रिय है। सिनेमा एक ऐसी कला है

जिसमें लगभग सभी ललित कलाओं साहित्य, संगीत, नृत्य, चित्रकला, वास्तुकला, मूर्तिकला, अभिनयकला आदि का उपयोग आवश्यकतानुसार किया जाता है। सिनेमा का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। वह हमारी सौंदर्याभिरुचि को बढ़ाता है व उसका परिष्कार करता है। सिनेमा से मानसिक विश्रान्ति मिलती है। इससे भावों का विरेचन होता है। उच्च-कोटि का सिनेमा जीवन संघर्ष के लिए प्रेरित करता है। वह व्यक्ति का विवेक जाग्रत करता है। उससे सामाजिक रूढ़ियों, कुरीतियों, अंधविश्वासों का विरोध करने के लिए दिशा और शक्ति मिलती है तथा सामाजिक, राजनैतिक जागरूकता फैलती है। हिंदी सिनेमा हिंदी भाषा के प्रति रुचि और हिंदी भाषा की समझ भी उत्पन्न करता है।

हिंदी सिनेमा ने अपने शुरूआती दौर से ही भारतीय समाज को सीधे-सीधे बहुत अधिक प्रभावित किया है। यही नहीं सिनेमा ने अनेक सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आंदोलनों के लिए देश की जनता को प्रेरित किया है और दिशा दी है। सिनेमा जहाँ एक ओर मनोरंजन करता है वहीं जागरूक भी करता है। सिनेमा अपनी कथा-पटकथा के द्वारा, अपने संवादों के द्वारा, फिल्मी गीतों के द्वारा, प्रतिष्ठित अभिनेता-अभिनेत्रियों के द्वारा वो सब कार्य करता है, सभी प्रभाव उत्पन्न करता है जो दो या तीन घंटे में सामान्यतः असंभव होता है। सिनेमा का अपने दर्शक/श्रोता पर सम्मोहनकारी प्रभाव होता है। इस प्रभाव को उत्पन्न करने में फिल्म के कलाकारों की सार्वजनिक छवि भी महत्वपूर्ण होती है।

हिंदी फिल्मों में अभिनेताओं द्वारा बोले गए अनेक ऐसे संवाद हैं जो अपनी भाषा के कारण, अपनी आकर्षक शब्दावली और चुटीले अंदाज के कारण दर्शक/श्रोताओं को वर्षों तक याद रहते हैं। 'मुगले-आजम' फिल्म में अकबर बने पृथ्वीराज कपूर, अनारकली बनी मधुबाला से कहते हैं - ''अनारकली ... सलीम तुम्हें मरने नहीं देगा और हम तुम्हें जीने नहीं देंगे''। 1965 में प्रदर्शित फिल्म 'वक्त' का डायलाॅग - 'जिनके घर शीशे के होते हैं, वो दूसरों के घर पर पत्थर नहीं फेंका करते।' अभिनेता राजकुमार की विशिष्ट संवाद अदायगी और दमदार आवाज के कारण बहुत लोकप्रिय हुआ। सदी के महानायक अभिताभ बच्चन और शशिकपूर द्वारा बोले गए फिल्म 'दीवार' के संवाद - 'आज मेरे पास गाड़ी है, बंगला है, पैसा है .... तुम्हारे पास क्या है? ... मेरे पास माँ है।'' आज भी हर किसी की जुबान पर है।

सन् 1978 में आई फिल्म 'विश्वनाथ' का यह संवाद - ''जली को आग कहते हैं, बुझी को राख कहते हैं जिस राख से बारूद बने उसे विश्वनाथ कहते हैं'' अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा का ट्रेडमार्क डायलॉग बन गया।

''पुष्पा आई हेट टियर्स ... इन्हें पोंछ डालो'' - 'अमर प्रेम' फिल्म का यह संवाद सुपरस्टार राजेश खन्ना की प्रभावशाली अभिव्यक्ति के कारण बहुत प्रसिद्ध हुआ।

हिंदी फिल्मों के अनेक ऐसे प्रभावशाली, यादगार संवाद है जो अपनी भाषा के कारण दर्शक/श्रोताओं को भूलाए नहीं भूलते जिनका वे अपने व्यक्तिगत जीवन में समय-समय पर अवसरानुकूल प्रयोग भी करते हैं। इनके जरिए इस प्रकार हिंदी भाषा उन अहिंदी भाषियों को भी समझ में आने लगती है जिन्होंने उसे कभी पढ़ा-लिखा भी न हो। कादर खान, सलीम जावेद, गुलजार आदि के संवाद लोगों में बहुत लोकप्रिय हुए।

हिंदी फिल्मों को देश-विदेश में लोकप्रिय बनाने में गीतों का अप्रतिम योगदान है। गानों के बिना हिंदी फिल्में अधूरी हैं। 'बैजू-बावरा', 'बरसात की रात', 'आवारा', 'चैदहवीं का चाँद', 'दिल दिया दर्द लिया', 'मधुमती', 'यहूदी', जैसी न जाने कितनी अनगिनत फिल्में हैं जो अपने गीतों के कारण प्रसिद्ध हुई। राजकपूर की फिल्म 'आवारा' के गीत 'मेरा जूता है जापानी ये पतलून इंगलिस्तानी ...' ने रूस में धूम मचा दी थी। 'आवारा' फिल्म के गानों के माध्यम से हिंदी रूस के लोगों की जुबान पर भी चढ़ गई। उन दिनों मास्को की सड़कों पर 'आवारा' फिल्म के गीत बजते थे और कोई भी रुसी 'आवारा हूँ ....' गाता-गुनगुनाता हुआ मिल जाता था। हिंदी फिल्मों के अनेक सुमधुर, कर्णप्रिय, स्मरणीय गाने हैं जिन्हें लोग गाते-गुनगुनाते हैं, रेडियो-टेलीविजन और मोबाइल पर सुनते हैं, अपने जीवन के महत्वपूर्ण अवसरों (जन्मदिवस, शादी-ब्याह) पर्व-उत्सवों पर गाते और बजाते हैं। ये फिल्मी गाने इतने लोकप्रिय हैं कि आम जीवन में कीर्तन और जगरातों के भजनों को भी उन्हीं की तर्ज पर गाया-बजाया जाता है। इसका सबसे बड़ा कारण है हिंदी फिल्मी गानों की हिंदी भाषा जिसमें किसी भी भारतीय भाषा के शब्दों का यहाँ तक कि विदेशी शब्दों को लेने का कोई परहेज नहीं होता। क्या तत्सम् शब्द, क्या तद्भव शब्द, क्या देशज, अन्य स्थानीय बोलियों के शब्द या अन्य भारतीय भाषों के शब्द, क्या अरबी-फारसी, क्या अंग्रेजी या अन्य किसी विदेशी भाषाओं के शब्द बल्कि पूरे के पूरे पद ही ले लिए जाते हैं जो उसे अधिक संप्रेषणीय, मधुर बनाकर लोकप्रिय और स्मरणीय बनाते हैं। यहाँ पर किसी भी भाषा का कोई भी शब्द वर्जित नहीं है।

फिल्मी गीतों के जरिए हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में रेडियो का महत्वपूर्ण स्थान है। विविध भारती, ऑल इंडिया रेडियो की विदेश सेवा, विभिन्न रेडियो प्रसारण, बीबीसी, रेडिया सिलोन ने नए-पुराने हिंदी फिल्मी गीतों का प्रसारण कर लोगों का मनोरंजन किया है। रेडियो पर प्रसारित 'बिनाका गीतमाला' के तो लोग इतने दीवाने थे कि फिल्मी गीतों पर आधारित अमीन सयानी के इस कार्यक्रम को सुनने के लिए

घर में रेडियो न होने पर भी दुकानों और ढाबों आदि पर जाते थे। अपने जमाने में यह कार्यक्रम लोकप्रियता के शिखर पर था। ''यूरोप के देशों में कोलोन, बीबीसी ब्रिटिश रेडियो, सनराइज, सबरंग के हिंदी सेवा कार्यक्रमों को हिंदी प्रेमी बड़े चाव से सुनते हैं। यूरोप के देशों में ऐसी गायिकाएँ हैं जो हिंदी फिल्मों के गाने गाती हैं तथा स्टेज शो करती हैं।''[2]

हिंदी फिल्मों ने अपने गानों और संवादों से हिंदी भाषा को विश्वविद्यालयों से, पुस्तकालयों से, साहित्यिक रचनाओं से बाहर निकालकर जन-जन की भाषा बनाया। यही कारण है कि हिंदी भाषा का वास्तविक प्रचार-प्रसार जो न तो राजभाषा संबंधी नियम-अधिनियम, हिंदी प्रचार समितियाँ और संस्थाएँ, साहित्यकार-अध्यापक, विद्यालय-विश्वविद्यालय नहीं कर पाए वह कार्य अर्थात् हिंदी का प्रचार-प्रसार, उसे राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा तथा विश्वभाषा बनाने का श्लाघनीय कार्य हिंदी फिल्मों के गानों, संवादों और शीर्षकों ने किया है। इसके आधार पर यह कहने में कोई गुरेज नहीं होना चाहिए कि हिंदी के वास्तविक कवि ये फिल्मी गीतकार हैं बल्कि वे नहीं जिन्हें विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में पढ़ा-पढ़ाया जाता है। क्योंकि हिंदी और अहिंदी भाषी जनता को हिंदी के कवियों की पंक्तियाँ भले ही याद न रहे परन्तु सैंकड़ों गाने अवश्य याद होंगे। हमारे यहाँ जो फिल्मी गीतकार हैं वे भिन्न-भिन्न आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमियों, अलग-अलग स्थानों, शहरों और क्षेत्रों से आते हैं। सबकी अपनी-अपनी मातृभाषाएँ, शैक्षिक पृष्ठभूमि अलग-अलग है लेकिन इन्हें फिल्म की कहानी के अनुसार, पात्र के व्यक्तित्व और भूमिका के अनुसार हिंदी में गाने लिखने होते हैं इसलिए सभी गीतों की भाषा तो हिंदी होती है लेकिन उसमें अनन्त विविधता होती है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि एक ही सिचुएशन पर हर गीतकार अपने व्यक्तित्व और शैली के अनुसार उसके बोल अलग-अलग लिखता है। अनेक बेहतरीन गीतकार जैसे साहिर लुधियानवी, राजा मेंहदी अली खान, शकील बदायूँनी, राजेंद्र कृष्ण, शैलेंद्र, हसरत जयपुरी, मजरूह सुल्तान पुरी, प्रदीप, नरेंद्र शर्मा, आनंद बख्शी, नीरज, योगेश इंदीवर, गुलजार आदि हिंदी फिल्म जगत की देन हैं।

हिंदी फिल्मी गानों को लोकप्रिय बनाने में और इस प्रकार हिंदी भाषा को जन-जन तक पहुँचाने में फिल्म के संगीतकारों और उनकी धुनों का भी अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। फिल्म संगीतकारों ने कहीं पर शास्त्रीय संगीत के आधार पर, कहीं लोकगीतों की धुनों पर, कहीं गज़लों और कव्वालियों के आधार पर और कहीं पश्चिमी धुनों पर अपने सुरों को सजाया है। गाने के संगीत में स्वर, लय, ताल का संगम होता है। अनेक संगीतकारों ने अपनी धुनों के अनुरूप गीत लिखवाए। धुन पहले बन जाती थी और गीत बाद में रचा जाता था। संगीतकारों के कर्णप्रिय संगीत के कारण फिल्में हिट और सुपरहिट रही हैं। नौशाद, एस.डी.बर्मन, शंकर-जयकिशन, अनिल विस्वास, चित्रगुप्त, सी.रामचंद्र, रवि, खैय्याम, मदनमोहन, कल्याणजी आनंदजी के सुरीले संगीत से सजे सैंकड़ों गाने हमारे सुख-दुख, मिलन-विरह, उमंग-आह्लाद की अभिव्यक्ति बने हैं। हिंदी गानों की लोकप्रियता प्रकारांतर से यह प्रमाणित करती है कि हिंदी की पहुँच कितनी गहरी और विशाल है।

फिल्मी गीतों और हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में फिल्मी गायक-गायिकाओं, उनकी गायन शैली तथा उनकी अपनी लोकप्रियता का भी विशेष योगदान रहा है। नायक के साथ गायक की आवाज और नायिका के साथ गायिका की आवाज की संगति कुछ ऐसी लोकप्रिय हुई कि गायक की आवाज नायक की आवाज बन गई और गायिका की आवाज नायिका की आवाज बन गई। हिंदी फिल्मो के शो मैन राजकपूर की आवाज पार्श्व गायक मुकेश थे तो पहले सुपर स्टार राजेश खन्ना की आवाज पार्श्व गायक किशोर कुमार थे। मोहम्मद रफी की आवाज दिलीप कुमार, देवानंद और शम्मी कपूर पर बखूबी सूट करती थी। हिंदी फिल्मीं गानों को और उसके द्वारा हिंदी भाषा को घर-घर तक पहुँचाने में इन नायकों-गायकों, नायिकाओं-गायिकाओं ने एक-दूसरे के पूरक की भूमिका अदा की और अपने गानों के द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मोहम्मद रफी, तलत महमूद, हेमंत कुमार, किशोर कुमार, लता मंगेशकर, आशा भौंसले, गीता दत्त आदि के गाने सुनकर ही लोग सिनेमाघरों की ओर जाते थे। इनके सुरों का जादू ऐसा है कि लोग इनके गानों को न केवल गाते-गुनगुनाते हैं बल्कि उनकी आवाज की नकल कर उनके जैसा गायक बनने की कोशिश भी करते हैं। इन गायक-गायिकाओं ने देश-विदेश में अनेक स्टेज शो करके हिंदी के प्रसार में महत्ती भूमिका निभाई है।

हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता और उसके माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में फिल्म के कलाकारों का विशेष योगदान रहा है। फिल्म के मुख्य अभिनेता-अभिनेत्री पर फिल्म को हिट और सुपरहिट कराने का बड़ा दारोमदार रहता है। अपने सशक्त अभिनय, प्रभावी संवाद अदायगी, मनमोहक नृत्य शैली और आदर्श छवि के कारण ये लोगों के मन पर गहरी छाप छोड़ते हैं। हिंदी फिल्म जगत में के.एल. सहगल, पृथ्वीराज कपूर, अशोक कुमार, राजकपूर, दिलीप कुमार, देवआनंद, शम्मीकपूर, सुनील दत्त, राजेन्द्र कुमार, राजेश खन्ना, अमिताभ बच्चन ने अपने शानदार अभिनय से अपनी जीवंत उपस्थिति दर्ज की है। इन अभिनेताओं की अपनी फिल्मों की सफलता में और उनके द्वारा हिंदी को अपार जनसमूह तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण और विशिष्ट भूमिका रही है। यदि नब्बे के दशक के अभिनेताओं की

लोकप्रियता की बात की जाए तो "आज की तारीख में चीन और ब्रिटेन में आमिर खान, अमेरिका और जर्मनी में शाहरूख खान तथा अरब देशों में सलमान खान उतने ही लोकप्रिय हैं जितने अपने देश भारत में। खास बात यह है कि इन देशों के अलावा कनाडा, जापान, मलयेशिया और तुर्की में भी भारतीय फिल्में तेजी से लोकप्रिय हुई हैं।"3 इस प्रकार हिंदी फिल्मी सितारों ने अपनी फिल्मों के जरिए हिंदी को विश्वव्यापी बना दिया है। वस्तुतः "बोलचाल की भाषा के रूप में हिंदी भाषा का प्रसार अब विश्वव्यापी है। इसमें हिंदी फिल्मों की खास भूमिका है। हिंदी फिल्में गैर हिंदी भाषियों को भी हिंदी की ओर आकर्षित करती हैं। हिंदी फिल्मों को दुनिया की कई भाषाओं में डब भी किया जाने लगा है। जापान में भी हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता बहुत बढ़ रही है। फिल्मों के जरिए हिंदी भाषा कई देशों और संस्कृति के लोगों को एक-दूसरे से जोड़ रही है।"[4]

आज टी.वी. चैनलों पर फिल्मी नृत्य-गीतों पर आधारित अनेक कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं जिनमें नृत्य और गायन प्रतियोगिता होती है। 'इंडियन आइडल', 'सारेगामापा', 'नच बलिए', 'झलक दिखला जा' जैसे कार्यक्रम दर्शकों में बहुत लोकप्रिय हुए हैं। इनमें भाग लेने वाले प्रतिभागी सिर्फ हिंदी क्षेत्र से ही नहीं बल्कि पूरे भारत के अलग-अलग हिस्सों से आकर हिंदी फिल्मी गीतों और नृत्यों के माध्यम से अपनी प्रतिभा और कला का प्रदर्शन करते हैं। ये कार्यक्रम पूरे भारत में देखे जाते हैं क्योंकि इन प्रतियोगिताओं में वही प्रतिभागी जीतता है जिसे सबसे अधिक वोट मिलते हैं। अपने क्षेत्र के प्रतिभागी को जिताने के लिए वहाँ के दर्शक उसे अधिक से अधिक वोट करते हैं। वे ऐसे कार्यक्रमों को बड़े चाव से देखते हैं। इस प्रकार हिंदी फिल्मी गीतों पर आधारित हिंदी में बने इन लोकप्रिय कार्यक्रमों की दर्शक संख्या भारत में ही नहीं विदेशों तक फैली है।

टेलीविजन पर अब सोनी Mix, 9XM, 9Xजलवा, मस्ती, B4U Music, E -24, MTV जैसे अनेक चैनल हैं जो केवल नए-पुराने गानों को प्रसारित करते हैं। इनके अतिरिक्त केवल हिंदी फिल्मों को प्रदर्शित करने वाले अनेक प्राइवेट चैनल हैं जिन्हें विश्वभर में हिंदी भाषी और अहिंदी-भाषी बड़े चाव से देखते हैं। इस प्रकार हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार बड़े ही अनौपचारिक किन्तु प्रभावी ढंग से हो जाता है। अब हिंदी फिल्मों की रिलीज सिनेमा हॉल, मल्टीप्लैक्स और विदेशों में एक साथ की जाती है। यही नहीं इंटरनेट पर भी सभी हिंदी फिल्में सबको किसी भी समय अर्थात् हर समय उपलब्ध हैं दूसरे शब्दों में विश्व के कोने-कोने में हिंदी फिल्मों की पहुँच है। इस प्रकार हिंदी भाषा हिंदी फिल्मों के माध्यम से, उसके संवादों, फिल्मी गीतों के माध्यम से, नए-नए जनसंचार माध्यम से, सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से विश्वभर में हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी जनता में अत्यंत सहज, स्वाभाविक और अनौपचारिक ढंग से फैल रही है, बढ़ रही है, प्रचारित-प्रसारित हो रही है और विकसित भी हो रही है।

सन्दर्भ :

1. प्रोफेसर महावीर सरन जैन (सेवानिवृत्त निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान)' संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाएं एवं हिंदी' Bharat khoj.org
2. वही
3. दिनेश श्रीनत 'दुनिया में बढ़ रही बॉलीवुड की पैठ', संपादकीय पृष्ठ, नवभारत टाइम्स, 19 दिसंबर, 2019.
4. तोमोको किकुची (जापानी मूल की हिंदी लेखिका) 'दुनिया के हर कोने में हैं हिंदी', संपादकीय पृष्ठ, हिंदुस्तान, 14 सितंबर 2019.

वेबसाइट : https://en.m.wikipedia.org
Amazon Prime Vedio